iJRASET
International Journal For Research in
Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 14 Issue: III Month of publication: March 2026

DOI:

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 14 Issue III Mar 2026- Available at www.ijraset.com

समकालीन भारतीय दर्शन में राष्ट्र के प्रति स्वामी विवेकानंद का योगदान

शोधकर्ता: रहितेश्वर राय
दर्शनशास्त्र विभाग, ति० मां० भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

स्वामी विवेकानंद एक प्रखर चिंतक होने के साथ-साथ राष्ट्र अनुरागी संत भी थे। वह भारत को 'विश्वसंदर्भ सूची:- गुरु' का दर्जा दिलाने में कामयाब रहे। स्वामी जी ने अपने अल्प जीवन काल में ही धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र और प्रगतिशील समाज की परिकल्पना की थी। स्वामी विवेकानंद के जन्म को डेढ़ सदी बीत चुकी है, तथापि आज भी उनके संदेश प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। संपूर्ण राष्ट्र के भविष्य की दिशा तय करने में भी उनके विचार निर्णायक भूमिका का निर्वहन करने की क्षमता रखते हैं। स्वामी जी एक 'नव वेदांती' थे। आज वेदांत-दर्शन को विज्ञान की मान्यता मिलने लगी है, जिससे स्वामीजी के विचार और प्रासंगिक हो गए हैं।

स्वामीजी प्रखर राष्ट्रवाद के प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि राष्ट्र के प्रति गौरवबोध से ही राष्ट्र का कल्याण होगा। हिंदू संस्कृति, समाजसेवा, चरित्र-निर्माण, देशभक्ति, शिक्षा, व्यक्तित्व तथा नेतृत्व इत्यादि के विषय में स्वामीजी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं। स्वामीजी के संपूर्ण व्यक्तित्व और राष्ट्र को समर्पित प्रेरणाप्रद उनका जीवन— राष्ट्ररक्षा, राष्ट्रगौरव एवं राष्ट्राभिमान का पाठ पढ़ाने वाली, राष्ट्रवाद की अलख जगाने वाली है। स्वामी विवेकानंद एक सत्य शोधक एवं प्रत्यक्ष संत थे, जिन्होंने मानव जीवन को पूर्णता प्रदान करने वाले सभी बिन्दुओं पर अपने विचार व्यक्त किये। उनका विचार मुख्यतः केन्द्रित है— धर्म, दर्शन, इतिहास, राष्ट्र, समाज, युवा, छात्र, राजनीति आदि पर। संभवतः इन सभी पर उन्होंने समुचित एवं विशद चिन्तन प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय एकता के बारे में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि भले ही भारत में भाषायी, जातिवाद ऐतिहासिक एवं क्षेत्रीय विविधताएं है लेकिन इन विविधताओं को भारत की सांस्कृतिक एकता एक सूत्र में पिरोये हुए है। उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में जाकर अपने भाषणों में धार्मिक चेतना को जगाने एवं दलित, शोषित व महिलाओं को शिक्षित कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की बात कही है।

स्वामी विवेकानन्द एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे और उन्हें अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व भी था। स्वामी विवेकानन्दजी ने युवा वर्ग को चरित्र निर्माण के पाँच सूत्र दिए— आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग। उपयुक्त पाँच तत्वों के अनुशीलन से व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व तथा देश और समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जीवन में एक ही लक्ष्य साधो और दिन-रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पूरी यहाँ आपकी साझा की गई दोनों छवियों इतिहास, राष्ट्र, समाज, युवा, छात्र, राजनीति आदि पर। सम्भवतः इन सभी पर उन्होंने समुचित एवं विशद चिन्तन प्रस्तुत किए।

स्वामी विवेकानन्दजी कहा करते थे कि आदर्श को पाने के लिए सहस्र बार आगे बढ़ो और यदि असफल हो जाओ तो फिर नया प्रयास अवश्य करो। जिससे तुम्हें सफलता सहज ही निश्चित हो जायेगी। स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि जब तक भारत में गरीबी का उन्मूलन नहीं होगा तब तक भारत का सांस्कृतिक और भौतिक विकास संभव नहीं है। राष्ट्र-भावना से प्रेरित स्वामीजी के क्रान्तिकारी विचारों से स्पष्ट होता है। वे कहते हैं कि हमारा राष्ट्र ही हमारा एक मात्र जागृत देवता है। इसलिए निराकार देवी देवताओं के पीछे हम बेकार ना दौड़कर उस विराट देवता (राष्ट्र) को जिसे हम चारो ओर देख रहे है उसकी पूजा करें। इस विराट की पूजा ही प्रथम पूजा है। इसलिए ये ही हमारे ईश्वर है और **राष्ट्र भक्ति ही सच्ची भक्ति है।**

स्वामी जी का उदात्त चरित्र राष्ट्रवाद के पक्षवादी थे इसलिए वे सांस्कृतिक व धार्मिक सृष्टि से **वासुदेव कुटुम्बकम** की संस्कृति और सार्वभौम धर्म का पूरजोर

समर्थन करते है। वे राष्ट्रीय उन्नति एवं जागरण के लिए एक वक्तव्य में कहे थे कि राष्ट्र के रूप में हम अपना व्यक्तित्व विस्मृत कर बैठे है और यही इस देश में सब दुष्कर्मों की जड़ है। प्रत्येक देश में जो बुराइयाँ हमें देखने को मिलती है वह धर्म के कारण नहीं है, बल्कि धर्म द्रोह के कारण। [1]इसलिए 'दोष धर्म का नहीं है, मनुष्य का है। इसलिए उनका स्पष्ट विचार था कि भारत में राष्ट्रवाद तब तक उन्नति नहीं कर सकता है जबतक ना **आध्यात्म** एवं **लोक–कल्याणकारी** भावना से मानव जुड़े। राष्ट्रवाद का मूल स्वर है सामाजिक जागृति। इस विचार के अनुसार स्वामी जी का कहना है कि मानव और राष्ट्र का आन्तरिक सम्बन्ध है एवं समस्त विश्व मानव समाज के एकत्व में निहित है। सही अर्थों में राष्ट्र तभी प्रगति करेगा जब मनुष्य मानव केन्द्रित एवं मानव कल्याणकारी भावना से प्रभावित हो। इसी अर्थ में मानव को संकीर्णता की अपेक्षा विश्वबन्धुत्व एवं सभी धर्मों के प्रति सम्मान की भावना रखना चाहिए। इस रूप में स्वामी जी का विचार राष्ट्रवाद, धार्मिक सहिष्णुता, धर्म निरपेक्षता, अन्तर्राष्ट्रीयता, मैत्री और सच्चे भ्रातृत्व के समर्थक है। राष्ट्रवादी चेतना की सृष्टि से भारतीय चिंतन का इतिहास अति गौरवमय है। क्योंकि भारतीय चिंतन धारा यथार्थ के धरातल पर आध्यात्मिक एवं लोक कल्याणकारी सामंजस्य स्थापित करने पर बल देता है।

स्वामी विवेकानन्द का स्पष्ट मत था कि भारत में दृढ़ और स्थायी राष्ट्रवाद का निर्माण **नैतिक** तथा **आध्यात्मिक** प्रगति के शाश्वत नियम के द्वारा ही संभव है। स्वामी विवेकानन्द का विचार हमेशा ही समन्वयकारी रहा है और यही भावना राष्ट्रवाद की संस्कृति को विकसित करती रही है। राष्ट्रवाद का सार नैतिकता में निहित माना है। स्वामी विवेकानन्द नैतिकता और राष्ट्रीयता को एक दूसरे से अविच्छेद रूप से जुड़े हुए मानते हैं। जहाँ राष्ट्रवाद के लिए नैतिकता आवश्यक है वहीं नैतिकता के विकास के लिए धर्म अत्यन्त आवश्यक है। विवेकानन्द के अनुसार मानव को सही अर्थों में मानव समझना एवं उसे ईश्वर समझकर उसकी सेवा करना ही सच्चा धर्म है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने आध्यात्मिक चिंतन में **साहस** एवं **आत्मविश्वास** की दिव्य प्रेरणा को प्रतिष्ठित किया है। उन्होंने इस सत्य का उद्घाटन किया है कि मनुष्य में दिव्यता है क्योंकि वह आध्यात्मिक प्राणी है। दीन हीन, पिछड़े एवं अशिक्षित वर्ग को समाज की मुख्यधारा में सम्मिलित करने का उनका विशेष प्रयास था। उन्होंने दुखी मानवों की सेवा को ही ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ सेवा माना।

विवेकानन्द जी ने मानव धर्म को परिभाषित करते हुए कहा है कि ईश्वर सम्बन्धित सभी सिद्धान्त, नैतिक, नियम अथवा आदर्श मानव धर्म की परिभाषा के अन्तर्गत आना चाहिए। [2]विवेकानन्द जी ने कहा है संसार में जितने भी मनुष्य और जीव जन्तु है सभी परमात्मा हैं। सभी पर ब्रह्म के रूप में आपस में ईष्या-द्वेष झगड़ा एवं विवाद की अपेक्षा तुम परस्पर एक दूसरे की अर्चना करो एवं एक दूसरे से प्रेम करो।

[3]स्वामी जी जहाँ एक ओर राष्ट्रीय उत्थान के लिए सम्यक् उपदेश देते रहे वही दूसरी ओर उनका ध्यान भारत की आर्थिक एवं सामाजिक दुर्दशा को सुधारने में केन्द्रित था। उनका कहना था कि भूखा रहकर धर्म नहीं हो सकता है। उन्होंने स्पष्ट घोषणा किया कि जब पड़ोसी भूखा मरता हो तब मंदिर में भोग चढ़ाना पाप है।

है और जब मनुष्य दुर्बल और क्षीण हो तब हवन में घृत डालना अमानुषिक काम है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वे जनता की गरीबी के विरूद्ध संघर्ष करने पर बल देते है। स्वामी जी गरीबी को "**राष्ट्रीय पाप**" कहकर सम्बोधित करते थे। यही कारण है कि स्वामी जी सबों में पुरूषत्व, मानव गरीमा तथा सम्मान की भावना आदि का विकास करने पर बल देते थे। वे शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक उन्नति को मनुष्य का सबसे बड़ा पुरस्कार मानते थे। उनके अनुसार राष्ट्र का विकास मानव प्रेम, त्याग, निग्रह और सार्वभौमिक सहिष्णुता आदि जैसे गुणों पर निर्भर होता है। इसलिए मानव में इन गुणों का होना सर्वोपरि है।

स्वामी विवेकानन्द राष्ट्र निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका युवाओं का योगदान को मानते थे उनके अनुसार युवा ही राष्ट्र का भावी कर्णधार है। उनका कहना था कि यदि मुझे सौ ऐसे युवक मिल जाए जो पुरी निष्ठा, एकाग्रता, निस्वार्थ भाव से मेरे साथ काम करे तो मैं इस भारत का काया ही पलट दूंगा। कहने का तात्पर्य है कि यदि युवा निष्ठा पूर्वक, एकाग्रता के साथ कर्म में तल्लीन रहे आत्मविश्वास से पूर्ण आत्म निर्भर बने, अनुशासित हो तो निश्चित ही राष्ट्र के निर्माण में उनका योगदान अभूतपूर्व सिद्ध होगा। स्वामी जी ने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा था कि निराशा, कमजोरी, भय, आलस्य तथा ईर्ष्या युवाओं के सबसे बड़े शत्रु हैं। उन्होंने युवाओं को जीवन

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 14 Issue III Mar 2026- Available at www.ijraset.com

में लक्ष्य निर्धारण करने के लिए स्पष्ट संदेश दिया और कहा कि तुम सदैव सत्य का पालन करो, विजय तुम्हारी होगी। आनेवाली शताब्दियाँ तुम्हारी बाट जोह रही हैं। उन्होंने कहा था कि हमें कुछ ऐसे युवा चाहिए, जो देश की खातिर अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हों। ऐसे युवाओं के माध्यम से वे देश ही नहीं, विश्व को भी संस्कारित करना चाह रहे थे। वस्तुतः युवा राष्ट्र के अमूल्य निधि है युवकों को अपने सात्विक व शांत बुद्धि से असामाजिक तत्वों से दूर रहकर अपने गौरवपूर्ण वैभवशाली कृतित्व से राष्ट्र को चरम शीर्ष तक ले जाना है। स्वामी विवेकानन्द का कहना था "उठो जागो और चलते रहो जब तक तुम लक्ष्य को प्राप्त ना कर सको" उन्होंने कहा कि अगर युवाओं की उन्नत ऊर्जा को सही दिशा प्रदान कर दी जाय तो राष्ट्र के विकास के नए आयाम मिल सकते है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वामी विवेकानन्द के बहुआयामी विराट व्यक्तित्व तथा कृतित्व में राष्ट्रवादी विचार समाहित है। निश्चित रूप से इस उपभोक्तावादी, भौतिकवादी युग में स्वामी जी के ये विचार राष्ट्र के उन्नयन में संजीवनी सिद्ध होंगे।

निष्कर्ष

हम कह सकते है कि राष्ट्र निर्माण में उन्होंने जिन बातों को हमारे समक्ष रखे है यदि हम उन्हें अपना ले तो राष्ट्र अपने नये आयाम को स्पर्श करने में समर्थ होगा। इस प्रकार भारतीय संस्कृति के महान उद्घोषक, मानवता के महान पोषक, राष्ट्र प्रेमी विवेकानन्द के विचार राष्ट्रनिर्माण में महती भूमिका अदा करेगी।

संदर्भ सूची

[1] लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानन्द भाग-1 पृ०- 306-307
[2] विवेकानंद साहित्य, द्वितीय खण्ड पृ०-200
[3] संस्कृति के चार अध्याय, पृ०-510

©IJRASET: All Rights are Reserved | SJ Impact Factor 7.538 | ISRA Journal Impact Factor 7.894 |

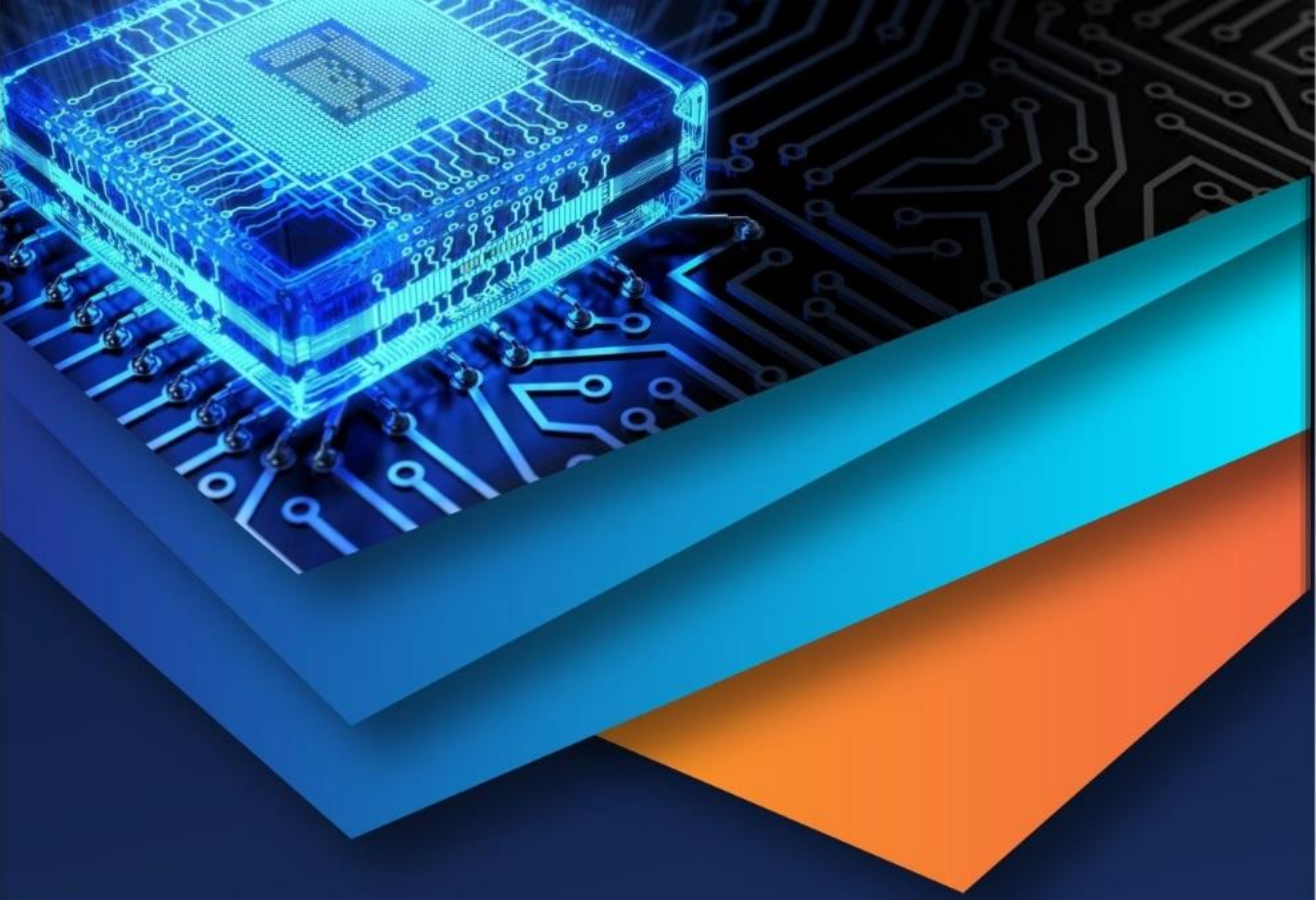

10.22214/IJRASET

INDEX COPERNICUS

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

TOGETHER WE REACH THE GOAL

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)